20

जान-बूझकर किए जाने वाले पाप से सावधान!

(10:26-31)

इब्रानियों 6:4-8 में पहले लेखक ने विश्वास से फिरने और इसके परिणामों की बात की। इब्रानियों 10:26-31 में उसने फिर दोहराया। परन्तु इस बार उसने उस शब्द का इस्तेमाल किया जिसका इस्तेमाल मैं इस अध्ययन के फोकस के रूप में करना चाहता हूं: ''क्योंकि ... यदि हम जान-बूझकर पाप करते हैं ...'' (10:26क)। मैं इस पाठ का नाम ''जान-बूझकर किए जाने वाले पाप से सावधान'' रख रहा हूं।

''जान-बूझकर पाप'' की एक परिभाषा

कैथोलिक चर्च में पाप को ''घातक'' और ''क्षमा योग्य'' पापों की दो श्रेणियों में बांटा जाता है, जिसमें घातक पाप इन दोनों किस्मों में अधिक गम्भीर है। आम तौर पर हम ज़ोर देते हैं कि पाप तो पाप ही है यानी कोई ''बड़ा पाप'' या ''छोटा पाप'' नहीं होता। और *कोई भी* पाप यदि उससे मन न फिराया जाए तो वह मारे प्राण को दोषी ठहरा सकता है। परन्तु इसके साथ भी हमें *जान-बूझकर* पाप और *अनजाने में* पाप में अन्तर को समझने की आवश्यकता है।

''जान-बूझकर पाप'' क्या है? पहली और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह जानते-बूझते किया जाने वाला पाप है। NIV में इसे इस प्रकार कहा गया है, ''यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें।'' NASB में ''जानते हुए'' अनुवाद किया गया है और NIV में ''जान-बूझकर'' यूनानी वाक्य के आरम्भ में मिलता है जो इस शब्द पर विशेष ज़ोर देता है। हमारे वचन पाठ के अनुसार जान-बूझकर किया गया पाप उसके द्वारा किया पाप है जिसे ''सच्चाई की पहचान प्राप्त हुई है'' (आयत 26क)। यदि इसे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो पाप और इसके परिणामों के बारे में बाइबल की शिक्षा को जानता है परन्तु जो उस शिक्षा को नज़रअन्दाज़ करके पाप करना चुनता है। यह जान-बूझकर परमेश्वर की आज्ञा तोड़ना है, ऐसे पाप को पुराने नियम में ''ढिठाई'' कहा गया है (देखें भजन संहिता 19:13)।

इसके लिए अंग्रेज़ी शब्द ''willful'' का अर्थ मूलतया ''इच्छा से भरा,'' यानी अपने ही तरीके से करने के इरादे से अपनी ही इच्छा से भरा हुआ। पाप के सम्बन्ध में इसका अर्थ परमेश्वर की इच्छा के बजाय अपनी ही इच्छा से भरे होना है। यह कहने के बजाय कि ''मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:42), जान-बूझकर किया जाने वाला पाप कहता है, ''तेरी नहीं परन्तु मेरी ही इच्छा पूरी हो!''

यह तर्क दिया जा सकता है कि परमेश्वर ने लोगों को स्वतन्त्र इच्छा देकर बनाया है, इस

कारण अधिकतर पाप ''जान-बूझकर'' हैं। इसलिए यह जोड़ा जाना चाहिए कि यहां बताया गया जान-बूझकर पाप एक बार की जाने वाली गलती नहीं बल्कि ढिठाई का पाप है। वाक्यांश के अन्त में यूनानी क्रिया वर्तमान काल में है, जो संकेत देता है कि यह निरन्तर कार्य करने का अर्थ देता है। NASB में अपने अनुवाद में निरन्तर कार्य का विचार किया गया है: ''इसलिए यदि हम जान-बूझकर पाप करते हैं।'' NIV में है ''यदि हम ... पाप करते रहें।'' यहां पर विचार परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध स्थिति की तरह विशेष पाप जितना नहीं है।

अब तक जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट होना चाहिए कि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई गलातियों 5:19-21 में दिए पापों की सूची बनाए और उन में से कुछ को ''जान-बूझकर'' और कुछ को ''अनजाने में'' किए गए पापों का नाम दे। जो बात पाप को ''जान-बूझकर'' बनाती है वह उसके किए जाने का *ढंग* नहीं है। जान-बूझकर पाप विद्रोही को दर्शाता है।

जान-बूझकर पाप के खतरे

हमें जान-बूझकर किए जाने वाले पाप पर चिन्ता क्यों होनी चाहिए? अध्याय 10 का अन्तिम भाग जान-बूझकर पाप के कई खतरे बताता है।

1. परमेश्वर का अपमान होता है

हमारे वचन पाठ के अन्त के निकट की आयतों को देखें। जान-बूझकर किया गया पाप जीवित परमेश्वर का अपमान है (आयतें 29, 31)। पुराने नियम में लिखा गया था कि ''जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए'' (गिनती 15:30)।

2. मसीह के बलिदान को नकारा जाता है

फिर, जान-बूझकर किया गया पाप यीशु के बलिदान को ठुकराना है (आयत 26; आयत 29 भी देखें)। ''केवल एक ही सार्थक बलिदान है और जब कोई उसे नकार देता है तो वह सहायता के लिए किसी और बलिदान की ओर नहीं देख सकता।''[1]

3. उद्धार छिन जाता है

इसलिए जान-बूझकर पाप आत्मिक रूप में मृत्यु है (आयतें 26-31)। हमारे वचन पाठ के उद्धरण व्यवस्थाविवरण 32 में मूसा के गीत से लिए गए हैं। मुख्यतया वहां परमेश्वर के शत्रुओं की बात थी; परन्तु वचन में वहां घोषणा थी कि परमेश्वर के लोगों को उसके न्याय से छूट नहीं मिलेगी। न ही मसीही लोगों को छूट है।

कोई पूछ सकता है, ''पर यदि मैं जान-बूझकर किए पाप से मन फिरा लूं, तो क्या मुझे क्षमा नहीं मिलेगी?'' मन फिराव की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जान-बूझकर पाप बहुत खतरनाक है। जब मैं अनजाने में पाप करता हूं तो मेरा विवेक मुझे दोषी ठहराता है; फिर मैं पुकार उठता हूं, ''हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर! मैं मन फिराता हूं! मुझे क्षमा कर दे!'' ऐसा नहीं है कि जान-बूझकर पाप करने वाले के साथ विशेषकर जो ढिठाई में जान-बूझकर पाप करता है, ऐसा

हो। जब कोई सर्वशक्तिमान परमेश्वर को इतनी स्पष्टता से नकारता रहता है तो अपने आपको टूटे मन वाले पश्चात्ताप में प्रभु के सामने झुकाने की दीनता उसे कहां से मिल सकती है?

सारांश

इस पाठ में मैंने अनजाने में पाप और जान-बूझकर किए जाने वाले पाप में अन्तर करने की कोशिश की है। परन्तु क्या आपको लगता है कि मैं *किसी भी* पाप को बढ़ावा दे रहा हूं? कोई जान-बूझकर पाप करने तक कैसे पहुंचता है? पाप को चाहे वह *कोई भी* पाप क्यों न हो, गम्भीरता से न लेकर! अनजाने में किए पाप से ईमानदारी से न निपटा जाए तो यह मन को ऐसा बना देगा जो जान-बूझकर पाप कर सकता है और करेगा। कुछ आयतों के बाद लेखक ने अपने पाठकों में भरोसा जताया (आयत 39): अभी वे हमारे वचन पाठ में बताई गई उस त्रासद स्थिति तक नहीं पहुंचे। परन्तु उसके कहने का अर्थ था कि *यदि वे उस मार्ग पर चलते रहें जिस पर चल रहे हैं,* तो वे अपने आपको उसी स्थिति में पाएंगे! इससे हमें अपने मनों में झांकने का अवसर मिला चाहिए कि हमारे जीवनों में ऐसा कोई पाप है जिसके लिए हम मन नहीं फिरा पाए? यदि हां तो आज ही सच्चे मन से पश्चात्ताप करने के लिए अपने निकट आने में परमेश्वर आपकी सहायता करे!

टिप्पणी

[1]जे. डी. थॉमस, *हिब्रूस एंड जेम्स,* दि वे ऑफ़ ट्रुथ: मैसेज ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (अबिलेन, टैक्सस: एसीयू प्रैस, 1989) 50.